Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 4 (2024) pp: 333-336
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

आधुनिक तकनीक, शिक्षा, सदाचार एवं संस्कृति

डॉ आभा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
एजुकेशन डिपार्टमेंट
जे० एस० हिन्दू पी० जी० कॉलेज अमरोहा

आधुनिक युग तकनीक का युग है। वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति, शिक्षण संस्थान, प्रयोगशालाएँ और पुस्तकालय सभी तकनीक से लैस हैं। आज के युग की कल्पना बिना तकनीक के असंभव सी जान पड़ती है।

आधुनिक तकनीक ने शिक्षा के क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। तकनीकी के उपयोग ने शिक्षा को सरल और सुगम बना दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में नए–नए अवसर भी प्रदान किए हैं। यदि हम यह कहें कि ''तकनीकी के उपयोग ने पारंपरिक शिक्षा को आधुनिकता का दुशाला उढ़ा कर नए रूप में परिवर्तित कर दिया है'' तो यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अतः कहा जा सकता है की नई आधुनिक तकनीक से लैस शिक्षा आधुनिक शिक्षा है।

आधुनिक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो तकनीक से सुसज्जित हो। जहाँ शिक्षक एवं शिक्षार्थी सभी तकनिकी का उपयोग अपने शैक्षिक उद्देय को पूरा करने के लिए करते हों। आज शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विद्यालय संस्थापक सभी शिक्षा में आधुनिक तकनीक के प्रयोग पर बल देते हैं। आज की पीढ़ी की बदलती सोच यह है की अगर इस प्रतिस्पर्धा के दौर में उनको आगे निकलना है या अपनी जगह बनानी है तो उनको अपने कार्यों में सफलता के लिए तकनीक का सहारा लेना पड़ेगा। बिना तकनीक के सहारे के उनकी हैसियत सिर्फ रेस के मैदान में एक लंगड़े घोड़े की तरह है, जो रेस के मैदान में खड़ा तो हो सकता है परन्तु दौड़ नहीं सकता, जीत नहीं सकता ।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को पभावी बनाने के लिए आधुनिक तकनीक का सहारा लेता है। पारंपरिक साधनों का उपयोग करने वाले शिक्षकों को शिक्षण संस्थानों में जगह बनाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। आज विद्यालयों में साक्षात्कार के समय यह सवाल प्राथमिकता से किया जाता है की वे इन्टरनेट एवं कंप्यूटर पर काम करना जानते भी हैं या नहीं।

वर्तमान समय आधुनिक तकनीक को समर्पित है। पारंपरिक कक्षाओं का स्वरुप बदलने लगा है। श्यामपट्ट की जगह प्रोजेक्टर ने ले ली है। चाक के स्थान पर पॉइंटर का प्रयोग होने लगा है। शिक्षक के पाठ योजना का स्वरूप बदल कर अब पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन हो गया है। ऐसे ही और अनेक आधुनिक वस्तुएं और तरीके हैं जो कि आधुनिक शिक्षा के पहचान बने हुए हैं।

इतिहास के झरोके से :

शिक्षा में आधुनिक तकनीक के प्रयोग की शुरुआत तब की बताई जा सकती है जब गुफाओं में दीवारों पर चित्र बनाने की कला की शुरुआत हुई होगी। ये चित्र प्रारंभिक उपकरण कहे जा सकते हैं। तत्पश्चात इसका सही काल निर्धारण तब हुआ जब १९२० के दशक की **सिडनी प्रोसेसे** की यांत्रिक शिक्षण मशीन का विकास हुआ । प्रारंभ में सैनिकों के प्रशिक्षण के लिए फिल्मों एवं मीडिया का प्रयोग किया गया। आज के पाठ्यक्रम के अनुसार वो विषय–वस्तु अधिक प्रभावशाली है जो देख एवं सुन के ग्रहण की जा सके, जहाँ द्रश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग किया जाए। १४४० के दशक का एक नया आविष्कार रहा हाइपरटेक्स्ट और फिर १९५० में स्किनर ने अनुदेशात्मक अनुदेश का प्रयोग किया। ब्लूम ने इस तकनीक का पूर्ण समर्थन किया । तत्पश्चात सी.बी.टी का विकास किया गया अर्थात कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षण । इसको वेब आधारित प्रशिक्षण भी कहा जाता था । १० का दशक आते आते डब्लू.डब्लू.डब्लू, ईमेल, आदि शिक्षा जगत में बहुत प्रचलित हुए। सीबीटी/सिबिएल का तात्पर्य व्यक्तीकृत अधिगम अर्थात स्वाध्ययन से है जबकि सीएमसी के अंतर्गत शिक्षक

या निजी शिक्षक की सुविधा भी होती थी। फिर आई.सी.टी. ने अपनी जगह बनाई। और आज हम देखते हैं की मोबाइल, इन्टरनेट एवं लैपटॉप का युग है।

आधुनिक तकनीक से लैस शिक्षा के लाभ :

1) अधिगम की शैलियों में विविधता लाता है : परंपरागत रूप में अधिगम शिक्षक केन्द्रित होता था । शैक्षिक उद्देश्य के निर्धारण को लेकर मूल्यांकन करने तक प्रत्येक पद शिक्षक द्वारा ही तैयार किया जाता था। मनोविज्ञान के बढ़ते प्रभाव ने छात्र को अधिक प्रभावी बनाया एवं अधिगम छात्र केन्द्रित होने लगा । आज नवीन विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग शिक्षक छात्र अन्तः क्रिया बढ़ाने के लिए किया जा रहा है । व्याख्यान विधि से शुरू हुई यह यात्रा आज असाइनमेंट विधि, प्रोजेक्ट विधि, अनुरूपण विधि वाद– विवाद विधि और प्रेजेंटेशन विधि तक पहुँच चुकी है जिसमे छात्र अपनी अधिक सहभागिता प्रस्तुत करने में सक्षम हो रहे हैं इससे अधिगम स्थाई भी हो रहा है।

2) अधिगम में एकरसता को तोड़ता है : एडगर डेल ने अपने अनुभव शंकु में इस बात का प्रतिपादन किया था कि छात्र नवीन ज्ञान को सीखने में जितने अधिक इन्द्रियों का समावेश करेगा उतना ही सीखने की प्रवृत्ति भी तेज होगी। उदहारणतः प्रयोगशाला में छात्र प्रयोग करके सीखता है और करके सीखने की प्रक्रिया के दौरान वह एक से अधिक इन्द्रियों का प्रयोग करता है और यह ही तकनीक सीखने की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाती है।

3) अधिगम प्रक्रिया को लचीला बनाता है : शिक्षा में मनोविज्ञान के प्रयोग ने भी इसे तकनिकी से जोड़ दिया है। मनोविज्ञान के अनुसार छात्र जब पढ़ने को तैयार हो तब उसको पढ़ाया जाए, उसकी रुचि के अनुसार पढ़ाया जाए, कठिन विषय को पहले पढ़ाया जाए ऐसी तमाम चीजों ने शिक्षा को प्रभावपूर्ण बनाया है। आज छात्र के अनुसार समय तालिका का निर्माण किया जाने लगा है, जिसमे कठिन विषयों को पहले और सरल विषयों को बाद में जगह दी जाती है। यही नहीं बल्कि छात्र को अधिक से अधिक विकल्पों के प्रयोग का अवसर भी दिया जाने लगा है जिसने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक लचीला एवं प्रभावी बनाया है।

4) शिक्षकों को आज के युग के साथ जीने की प्रेरणा देता है : बदलते हुए इस दौर में शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वह समय के साथ खुद को बदलता जाए। शिक्षक अपने जान को अद्धतन रखे, दूसरे शब्दों में कहें तो वही पढ़ा जाए जो प्रासंगिक हो। पुराने समय में यदि घुड़सवारी सीखना सभी के लिए अनिवार्य था तो आज के समय में कंप्यूटर चलाना जानना सभी के लिए अनिवार्य ही है। आगे आने वाले समय में मानव मूल्य विकसित करना शिक्षा की एक जरूरत बन जाएगी क्यूंकि जिस तरह से आधुनिकता की दौड़ में मूल्य कम होते जा रहे हैं उस तरह से नैतिक शिक्षा एक महती आवश्यकता बन जाएगी ।

5) सीखने की योग्यता का विकास करता है : आधुनिक तकनीक अधिगम की क्षमता को प्रभावी बनता है। जिसके लिए वह विभिन्न सहायक सामग्री का प्रयोग करता है जैसे पढ़ाने के दौरान चार्ट, मॉडल, वास्तविक नमूने, आदि शिक्षण सामग्री का प्रयोग करता है। इसके अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर छात्र सूचनाओं का सन्कलन करने के लिए भी आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हैं।

6) समय की बचत : शैक्षिक प्रक्रिया में तकनीक ने एक प्रगति यह भी की है की शिक्षक एवं छात्र दोनों का समय बच जाता है। शिक्षक कम समय में अधिक सुचना को प्रसारित कर पाता है और छात्र भी कम समय में अधिक जानकारी को जुटा पाता है। सर्च इंजिन इस मामले में सबसे अधिक लाभकारी सिद्ध होता है जिस सुचना को पाने के लिए विद्यार्थी पुस्तकालय एवं विशेषज्ञों के पास दौड़ते रहता था उसे अब मात्र उँगलियों की क्लिक से गूगल पर पा सकता है।

7) काम के बोझ को कम करता है : कंप्यूटर ने काम के बोझ को भी कम किया है। शिक्षक को अब कागज कलम की आवश्यकता नहीं होती वह अपने नोट्स बनाने के लिए सीधे कंप्यूटर, लैपटॉप आदि का प्रयोग करता है। इसी तरह छात्र भी अपनी शैक्षिक जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए इन्टरनेट का सहारा लेते हैं। उदहारण के लिए छात्र अपना असाइनमेंट बनाने के लिए इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं और कम समय में अधिक सूचनाओं को जुटा पाते हैं। इस प्रकार तकनीक शिक्षा में काम के बोझ को भी कम करता है। ऑनलाइन कोर्सेस इसका एक अच्छा उदाहरण हैं।

*Corresponding Author: डॉ आभा सिंह

8) सूचना को अद्धन बनाने में सफलता : नित नई खोजों के चलते ज्ञान का स्वरुप भी बदलता रहता है, पुराने ज्ञान में नए ज्ञान का समावेश हो जाता हैं। शिक्षा के हर क्षेत्र में लगातार नित नए शोध कार्य होते रहते हैं एवं तकनिकी ने इसमें क्रांति ला दी है। नए जान को पुराने जान में सरलता से अपडेट किया जा सकता है। इस प्रकार जान को नया स्वरुप लेने में सहायता होती है।

सदाचार एवं आधुनिक शिक्षा :

अच्छे एवं बुरे कार्यों में अंतर करना सदाचार कहलाता है। सदाचार का अर्थ है उत्तम आचरण करना । सदाचार दो शब्दों से मिलकर बना है सत आचार। जिसका अर्थ हुआ सत्य के प्रति आचरण । एक ऐसा आचरण जिस में सब सत्य हो कुछ भी असत्य न हो। सदाचारी व्यक्ति को सदैव सम्मान मिलता है। सदाचार छात्रों को नैतिक एवं अनैतिक मूल्यों की पहचान कराता है। सदाचार के माध्यम से वह समाज में सम्मान प्राप्त करता है। ब्रहम्लीन संत स्वामी रामसुखदास लिखते हैं, आचरण दो प्रकार के होते हैं अच्छा आचरण और बुरा आचरण । अच्छे आचरण को सदाचार कहा जाता है और बुरा आचरण से आशय दुराचार से है। सद्गुणों से सदाचार की प्राप्ति होती है जबकि बुरे काम करने वाला व्यक्ति दुर्गुणों से दुराचारी ही बनता है और अपने स्वाभाविक गुणों से भी हाथ धो बैठता है।

श्री कृष्ण गीतोपदेश में कहते हैं, यद्दचारित श्रेष्ठस्तात्त्देवेत्रो जनः अर्थात श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, अन्य पुरुष भी वैसा ही आचरण करते हैं। इसलिए सदाचार को मानव की सार्थकता का प्रमुख सूत्र माना गया है।

सद्गुण हमारे अच्छे व्यहवहार से बनते हैं, और छात्रों के अच्छे व्यवहार निर्माण में शिक्षक का बहुत बड़ा योगदान होता है। एक आदर्श शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव छात्र के चरित्र पर पड़ता है। आज की शिक्षा तकनीक से लैस होने का कारण हम कक्षा कक्ष पर्यावरण की बात करे तो मशीनों की जंजीरों में जकड़ी हुई है, जहाँ कई शिक्षण संस्थानों में तो शिक्षक कक्षा में जाए बगैर ही पढ़ाया करते हैं। इससे एक सवाल यह उठता है कि क्या मशीनें चरित्र का भी निर्माण कर सकती हैं। हां अलबत्ता यह बात अलग है की मशीनें आज के बदलते हुए दौर में शिक्षा एवं रोजगार में सहायक हैं परन्तु बढ़ते अपराधों की संख्या ने यह सुनिषित किआ है कि शिक्षित एवं समृद्धि में सहायक तकनिकी ने सद्गुणों पर गहरा प्रभाव छोड़ा है।

संस्कृति एवं आधुनिक शिक्षा :

टेलर महोदय के शब्दों में,

'' संस्कृति एक वह जटिल पूर्ण है जिसमे शामिल है जान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, रीति–रिवाज और कोई दूसरी भी क्षमताएँ जो मानव एक समाज के सदस्य के रूप में अर्जित करता है।''

टेलर महोदय अपनी परिभाषा में जटिल पूर्ण को सम्मिलित करे हैं जिससे उनका आशय पूर्ण से है, अर्थात संस्कृति एक प्रकार की एकता रखती है। संस्कृति के कई भाग हो सकते है परन्तु सभी भाग एक पूर्ण में समाहित हैं। व्यक्ति समाज का सदस्य है और वह संस्कृति को समाज में ही सीखता है। संस्कृति किसी एक मानव की देन नहीं है एह सम्पूर्ण समाज से परिलक्षित होती है।

फ्रान्ज बोआज संस्कृति को और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, ''संस्कृति एक समुदाए की सब सामाजिक आदतों की अभिव्यक्तियों को स्वीकार करती है, व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ, जो उस समूह की आदतों द्वारा जिसमे वह रहता है, प्रभावित होती है तथा मानव क्रियाओं के वह उत्पादन जो उन आदतों द्वारा निर्धारित होते हैं उन सबको भी ग्रहण करती है।''

दोनों परिभाषाओं पर चर्चा की जाए तो संस्कृति में समाज और व्यक्ति को महत्व दिया गया है। अर्थात यह कहना उचित होगा के संस्कृति के निर्माण में समाज में रहने वाले व्यक्तियों का सयोग होता है। जैसा समाज होगा वैसी ही संस्कृति का विकास होगा, जिस दिशा में समाज गति करेगा उस दिशा में ही समाज भी गति करेगी। संस्कृति ही समाज की पहचान होती है।

भारत एक संस्कृति सम्पान देश है। भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमे भारत का महें इतिहास, विलक्षण भूगोल और अनेको सभ्यताओं का योगदान रहा और जो आगे चलकर वैदिक काल में विकसित हुई । तत्पश्चात जैसे जैसे विदेशियों

*Corresponding Author: डॉ आभा सिंह

का आगमन हुआ और उन्होंने नए सांस्कृतिक आयामों को यहाँ स्थापित करना शुरु कर दिया। इस्सका प्रभाव यह हुआ की भारत में अनेक नई नई संस्कृतियों ने जन्म लेना प्रारंभ कर दिया ।

शिक्षा संस्कृति को कई पीढ़ी तक संक्रमित करती है। शिक्षा विद्यार्थी के जीवन में बदलाव लाती है। उसकी आवश्यकताओं को पूरा करती है जो उसके सांस्कृतिक समृद्धि का भी कारण बनती है। परन्तु आज की शिक्षा पद्धति भारतीय धरोहर से नहीं जन्मी है, वरन पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हुई है। इससे छात्र विभिन्न विषय भिन्न भिन्न तकनीकों के माध्यम से सीखता तो है परन्तु वह कहीं न कहीं अब पाश्चात्य संस्कृति से भी प्रभावित हो रहा रहा है। उसके रहन सहन पर, व्यव्हार और समझा–बुझ पर भी प्रभाव पड़ा है। इसका प्रभाव सांस्कृतिक मूल्यों पर भी पड़ा है।

यह आवश्यक है की हम तीव्र गति से बदलते हुए समाज का हिस्सा बर्ने, और अपना स्थान अपना अस्तित्व बनाने का हर संभव प्रयास करें परन्तु यह भी आवश्यक है की हमें अपने सदाचार एवं बदलती संस्कृति को भी बचाना है। अतः आवश्यक है की सदाचार एवं संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करने वाली शिक्षा को सुनियोजित किया जाए। छात्रों को तकनिकी के सही प्रयोग की सीख दी जाए। वह इन्टरनेट का प्रयोग कैसे, क्यूँ और कब करे। उसे सही और गलत का अंतर समझाने की आवश्यकता है । हमें इस बदलती हुई समाज की तस्वीर को भारतीय संस्कृति के अनुसार बनाए रखना है।

सन्दर्भः

• शुक्ला, सी. एम्ः शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रिय आधार, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, २०१३

• पणीकर, के. एन. ''शिक्षा, आधुनिकीकरण और विकास'' परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष १८, अंक ३, दिसंबर २०११

• पालीवाल, कृष्णदत्त. उत्तरआधुनिकता की ओर, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, पृष्ठ ६०.

• वार्शेन्य, सोनी (२०१४, फरवरी १३) नैतिक मूल्य मनुष्यता की पहचान है. Retrieved from http://www.irjmsh.com/

• अहमद, जकि. (२०१५) मानव मूल्यों पर उभरती तकनिकी का प्रभाव. Retrieved from http://www.researchgate.net/publication/2777307264 Impact of Emerging technologies on human values.

• शिहाब.ए. हमीद. (२०११) इन्टरनेट का नैतिक एवं सामाजिक मूल्य शिक्षा पर प्रभाव. Retrieved from http://researchgate.net/publication/267941714 effect of internet drawbacks on moral and social values of users in education.

• यूनस, मोहम्मद बनी. एवं अल–जुबी, समेर. (२०१५). समाज पर तकनिकी का प्रभावःअ रिव्युः जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीस एंड सोशल साइंस, २०(2), ८२–८६. retrieved from http://www.iosrjournals.org/iosrjhss/papers/vol20 issue2/version 5/NO20258286